SJIF 2013 = 1.795
ISSN: 2348-3083
An International Peer Reviewed & Referred
SCHOLARLY RESEARCH JOURNAL FOR
HUMANITY SCIENCE & ENGLISH LANGUAGE

मराठी और हिन्दी संत काव्य में रचनात्मक प्रासंगिकता

प्रा. सविता पुंडलिक चौधरी, Ph.D
हिंदी विभाग, किसानमहाविद्यालय, पारोला जि.जलगांव 425 111

Abstract

वर्तमान संदर्भ में मराठी संतों ने रचनात्मक साहित्य की रचना करते समय प्रासंगिकता को सामने रखकर अपना लेखन किया हैं। कोई भी संवेदनशील रचनाकार एवं कथाकार अपने युग से विमुख नही रह सकता। प्रासंगिकता रचनाकार को उसी रंग रूप में पढने और समझने को बाध्य करती है। किसी भी रचनाकार की प्रासंगिकता उनकी रचनाओं में व्याप्त मानवीय मूल्यों और सामाजिक समस्याओं को केंद्र में रखकर तय की जाती है। मराठी संतों ने अपनी समय संवेदना को अपने ही रंग रूप मेंअपनी काव्यधारा में अभिव्यक्त किया हैं। इन संतों ने अपने काव्य एवं रचनाओं में रचनात्मक प्रासंगिकताओं को सामने रखकर घटनाओं का चित्रण किया हैं। वर्तमान संदर्भ को सामने रखकर मराठी और हिन्दी संतो ने साहित्य में अपनी स्वतंत्र पहचान बनाई है।

प्रस्तावना – हिंदी साहित्य का भक्तिकाल केवल साहित्य रचना की दृश्टि से ही नहीं, संपूर्ण सांस्कृतिक चेतना की दृश्टि से भी महत्वपूर्ण काल था। देश पर विदेशी सत्ताओं के आक्रमण होने भ्रुरू हो गए थे। समाज भ्रमित स्थिति में जीवनयापन कर रहा था। यह काल सामंती, पूँजीपति और पुरोहितों का काल था। जनता कर्मकांड, आडंबर, अंधश्रद्धा, अज्ञान, और कुरीतियों के जाल में फंसी हुई थी। ऐसे समय में भ्रमित जनता को मार्ग दिखाने का कार्यसंतों ने किया।ऐसा माना जाता है कि संत साहित्य की रचना ईसा की बारहवीं सदी से भ्रुरू हो गयीं ।संत परंपरा के सर्वप्रथम पथद ाक प्रसिद्ध कवि जयदेव थे। उनसे लेकर 16वीं सदी तक साधना, वेणी,त्रिलोचन, नामदेव, रामानंद, सेना, नाई, कबीर, पीपा, रैदास, कमाल, धन्नाभगत जैसे कई संतों ने संत साहित्य को समृद्ध किया। ईधर मराठी साहित्य में ज्ञाने वर, नामदेव, एकनाथ, तुकाराम, रामदास आदि संतों की भक्तिधारा ने महाराश्ट्र के सर्वसामान्य जनजीवन को सँवारा और सुधारा। इन संतों ने भक्तिमार्ग को एक नया सार्थक नाम दिया। उन्होंने कहा ई वर का कोईएक रूप नहीं हैं, वह

निराकार है और सारे चराचर में व्याप्त है। ई वर भक्ति का अर्थ सभी मनुश्यमात्र को तथा प्राणियों को भी ईश्वर स्वरूप मानकर उनकी सेवा करना हैं। संतों ने जाति–पाँति, छुआछुत, भेदभाव, बाह्याआडंबर, अंधश्रद्धा, भ्रश्टाचार, लोभ, परनिंदा, पाखंड, अज्ञान से कोसों दूर रहने केलिए कहा हैं।मराठी और हिन्दी संतों का साहित्य वैश्णव, भौव और भक्ति संप्रदाय से प्रभावित हैं। संत ज्ञाने वर, संत मुक्ताई, संत तुकाराम, संत नामदेव, संत रामदास, संत चोखोबा, संत कबीर, संत तुलसीदास, संत गुरूनानक, दादू, पीपा, सेना आदि संतों ने मराठी और हिन्दी काव्यात्मक काव्यधारा का निर्माण किया। इन संतों ने प्रासंगिकता को सामने रखकर लेखन किया। संत काव्य का मूल्यांकन करते हुए सुप्रसिद्ध इतिहासकार इरफान हबीब ने इस रहस्यवाद के एक 'नाटकीय पहलू' का उल्लेख किया है। वे कहते है कि, ''नामदेव, कबीर, रैदास, नानक, दादू, आदि की जातियों (रंगसाज, जुलाहा, चमार, खत्री, धुनिया) का वि ोश सांकेतिक अर्थ है। ये संत उत्पीडित और दलित सामाजिक तबकों से आये थे, इनका एके वरवाद समाज की निचली श्रेणियों की आवाज बनकर प्रकट हुआ था।''1कबीर के एके वरवाद के संबंध में वे कहते है –''वास्तव में कबीर ऐसे एके वरवाद की स्थापना करते हैं जिसमे ई वर के प्रति पूर्ण समर्पण तो है परंतु सारे धार्मिक अनुश्ठानों को नकारा गया है और इस तरह वह कट्टर इस्लाम से बहुत आगे निकल गया है। कबीर के लिए ई वर से एकाकार होने का अर्थ मनुश्यों का एक होना है और इसीलिए वहाँ भ्राुद्धत्व और छुआछुत की प्रथा को संपूर्ण रूप से स्पश्ट भाब्दों में नकारा गया है तथा सब तरह के अनुश्ठानों को अस्वीकार किया गया है।''2 आज के संदर्भ में कवि तथा समाज सुधारक कबीर और उनके साहित्य की प्रासंगिकता पर विचार करने का मतलब है ''आज जीवन का विविध स्थितियों के बीच अपनी परंपरा और अपने अतित की प्रासंगिकता पर विचार करना और उन्हें पहचानना।''3 कबीर अपनी कृतियों के माध्यम से कई वर्शों के बाद भी भारतीय जनमानस के बीच सजीव हैं। उनके साहित्य में प्रासंगिकता का परिवेश दिखाई देता है। कबीर के साहित्य को वर्तमान परिप्रेक्ष्य में यदि देखा जाए तो कहा जा सकता है कि उनके साहित्य में क्रय विक्रय के लिए महत्वपूर्ण स्थान दिया जाता हैं। संत कबीर और संत तुकाराम के अर्थनीति विशयक विचार ही यह दिखा सकते है। संत कबीर कहते है– ''राजा दुबारा यौं फिरै, ज्यू हरिघई गाई।''4जिस प्रकार गाय हरियाली को देखकर बार –बार उसे खाने के लिए लालायित होकर वहाँ चक्कर काटती है। आज मनुश्य की अवस्था भी उस गाय की तरह हैं। कुछ लोग धन की लालसा से बार– बार राजदरबार के चक्कर काटते थे। उनकी तुलना कबीर ने हरिघई गाय के साथ की हैं। संत तुकाराम कहते है कि –

''जोडोनिया धन उत्तम वेव्हारें। बेंच करी।।

उत्तमचि गति तो एक पावेल।

उत्तम भोगील जीव खाणी।।''5

संत तुकाराम स्वयं धन को अपवित्र, मिट्टी के समान, विश समान, गोमांस समान, पत्थर समान मानते थे। प्रासंगिकता को सामने रखकर संत कबीर और संत तुकाराम ने काव्य का निर्माण किया जो इस युग में भी उतना ही सार्थक प्रतित होता हैं। उन्होंने सामाजिक, सांस्कृतिक समस्याओं का भी आकलन किया हैं। महाराश्ट्र के लार्ड ऑफ विठोबा के भक्ति संप्रदाय में संत ज्ञाने वर, संत नामदेव, संत तुकाराम, संत चोखोबा, संत मुक्ताई, संत एकनाथ का नाम लिया जाता हैं। मराठी संतों ने प्रासंगिकता को सामने रखकर लेखन किया हैं। इसीलिए यह अनुसंधान महत्वपूर्ण हैं। भारत एकात्मकता एवं धर्मनिरपेक्षता अंगीकार करनेवाला दे ा है। यहाँ पर विभिन्न धर्म, संप्रदाय के लोग रहते हैं। इसीलिए भारतीय संस्कृति बेजोड हैं। प्राचीन समय से ही भारत पर विदे ाी सत्ताओं के अनेक आक्रमण हुए है जिसके परिणमस्वरूप भारत में अराजकता, अनैतिकता, आंतरिक कलह की स्थिति उत्पन्न हुई। जिसका परिणाम भारतवासियों पर हुआ। ऐसी विपरीत स्थिति में भारतवासियों ने धर्म की भारण ली। उस समय भारत में इस्लाम धर्म का प्रादुर्भाव था। लोगों को बलात् मुसलमान बनाया जा रहा था। दे ा का वातावरण अराजकतापूर्ण था, इसी वजह से लोग धर्म की भारण में जा रहे थे । सिद्ध संप्रदाय अपनी भाक्तियों का गलत इस्तेमाल कर रहा था। ऐसे समय में गोरखनाथ ने नाथ संप्रदाय का निर्माण किया। इधर बौद्ध धर्म पतन की और जा रहा था, जैन और भौव धर्म का उदय हो रहा था।धर्म को लेकर भारतीय जनता भ्रमित स्थिति में थी। ऐसे समय संत महात्माओं ने समाज के पथ प्रद ाक का कार्य कियज्ञं भारतसंतों की भूमि है। सत्यम् , शिवम, सुंदरम् का तत्व संत कवियों के विचारों का आधार था। भक्तिसूत्रों , भागवत धर्म एवं धार्मिक मूल्यों की स्थापना और मानव मूल्यों की रक्षा के लिए संतो ने कार्य किया। संत शब्द शांत का अपभ्रं ा हो सकता है। एक मत यह भी है कि संत सत् का बहुवचन है। जिस साधक को सत् की अनुभूति हो चुकी हो वह संत होता है। चौदहवीं सदी के अंत में 'संत' भाब्द का प्रयोग विट्ठल अथवा वारकरी संप्रदाय के अनुयायियों के लिए होता था। आगे चलकर वह हिंदी में कबीर आदि निर्गुणियों के लिए होने लगा।डॉ धीरेंद्र वर्मा ने संत भाब्द के संदर्भ में कहा है , ''संतशब्द का व्यवहार केवल उन आदर्श महापुरूशों के लिए किया जा सकता है, जो पूर्णतः आत्मनिश्ठ होने के अतिरिक्त समाज में रहते हुए निस्वार्थ भाव से वि व कल्याण में प्रवृत्त रहा करते है।''6 संतों और कवियों ने मध्ययुगीन काल में अराजकता, अनैतिकता, धर्मांधता, अंधश्रृद्धा जैसी सामाजिक विकृतियों का खंडन–मंडन किया हैं। वे समाज के पथप्रदर्शक रहे है। अधिकांशतः संत, कवि निम्नवर्ग के थे और वे मानवता के सच्चे पुजारी थे। संत, कवियों के साहित्य ने तत्कालिन समाज, धर्म और दे ाकाल का सामाजिक यथार्थ द र्ान चित्रित किया हैं। वे निस्वार्थ भाव से वि व कल्याण में प्रवृत्त रहे हैं। संत कवियों ने भक्ति साहित्य का निर्माण किया हैं। संत कवियों के साहित्य को किसी समय, स्थान या किसी परिधि में नहीं बांधा जा सकता। वे जिस परिवे ा में जनम लेते हैं, पलते है; वे उस समय के तद्युगीन वातावरण से अछूते नहीं रहते है। वे उससे प्रभावित होते हैं। संत लोग न तो दा ार्निक थे, न उन्होंने इसके लिए दावा

ही किया हैं। वे लोग धार्मिक व्यक्ति एवं साधक थे। प्रासंगिकता यह संत साहित्य का केंद्र बिंदु रहा हैं। यह आज के युग में अनमोल हैं। संत, कवि सत्यवादी, सदाचारी, विवेक ील, सारग्राही, समग्र चिंतक एवं योगी के रूप में प्रासंगिक सिद्ध होते हैं। संत मानवता के पूजारी होते है इसमे कोई संदेह नहीं हैं। **मराठी संत साहित्य में रचनात्मक प्रासंगिकता –** भक्ति साहित्य की वि ोशता ही यह है कि यह साहित्य निर्भिकता का सच्चा पाठ पढाता है। भक्ति साहित्य में बार–बार अनुभव की बात कही जाती है। सूक्ष्मातिसूक्ष्म बोध का ज्ञान ।भव का अर्थ संसार है। संसार संबंधी अपने सूक्ष्मातिसूक्ष्म बोध को भक्तगण अनुभव करते हैं। मराठी संतो ने यह कार्य किया हैं। संत तुकाराम ने बाल्यावस्था में ही उत्तम व्यवहार कर धन कमाने का और उदात्त वृत्ति से खर्च करने का उत्तम आद र्ा लोगों के सामने प्रस्तुत किया था। डॉ आ• ह• सालुंखे के अनुसार ''सर्व सामान्य का भाोशण करने के लिए साहुकारी जैसा महत्वपूर्ण साधन उनके पास था वह उन्होंने अपने हाथों से नदी में डूबो दिया और सांसारिक लोगों के सामने अपने आचरण के द्वारा एक नया आद र्ा प्रस्तुत किया।''7अपने समस्त जीवन व्यवहार द्वारा उन्होंने यह सिद्ध किया कि संसार के लिए सम्पत्ति अनिवार्य हैं। संचित धन का विनियोग अच्छा करना चाहिए। ऐसा संत तुकाराम का कहना था। महाराश्ट्र संतो की भूमी हैं। यहाँ भक्ति की एक दीर्घ परंपरा रही हैं। संपूर्ण देश में महाराश्ट्र को भक्ति का अनमोल स्थान मिला हैं। वारकरी संप्रदाय के संत ज्ञाने वर की संत परंपरा को संत नामदेव ने आगे बढाया। उन्हें हिन्दी के संत साहित्य का प्रवर्तक माना जाता हैं। विठोबा के सभी संत, भक्त थे। संत नामदेव और संत तुकाराम ने हिन्दी भाशा में भी लेखन किया हैं। वे कहते हैं –''मन मेरी सुई, तन मेरा धागा।

खेचरजी के चरण पर नामा ि ांपी लागा।''8

भक्ति में लीन होने के बाद संत नामदेव ने अपनी रचनाएं लिखी।संत नामदेव कहते है कि –

'काहे कूं कीजै ध्यान जपना।

जो मन नाही सुध अपना।

साँप कांचली छाडे विश नाहीं छाडे।''

उदिक में बग ध्यान माडे।''9

सामाजिक विशमता तथा धार्मिक आडंबरों का विरोध संत नामदेव ने किया और हिन्दी साहित्य में लेखन किया। वे कहते हैं–संत एकनाथ की लिखी गोळण अर्थात् राधा कृश्ण की रासलीलाके पद आज भी वि ोश प्रसिद्ध हैं।समर्थ रामदास ने दासबोध और मनाचे भलोक का प्रासंगिकता को सामने रखकर विवेचन किया

है। संत तुकाराम को मराठी सारस्वत में कबीर कहाँ जाता है। तुकाराम की अभंग गाथा में अनेक हिंदी पद पाए जाते हैं। उदा –

''राम कहो जीवन कल सोही।

हरि भजसु विलंब पाई ।''10

''कहाँ से लाऊ मधूरा बानी।

रीझे ऐसी लोक बिरानी।''11

तुकाराम कहते है पांडुरंग, नामदेव के स्वप्न में आए और उन्होंने नामदेव से कविता करने का आग्रह किया। नामदेव, तुकाराम के स्वप्न में आए और उन्होंने अपना अधूरा कार्य पूरा करने के लिए तुकाराम से कहा।''कविता करो वाणी व्यर्थ न करो।

भाब्दों में कविता किए चलो।''

विठोबा सदा तुम्हारे वाणी में प्रेम प्रसाद स्फुर्ति भरते रहे।ऐसा तुकाराम को कहाँ गया। संत तुकारामने लोक साहित्य द्वारा लोगों से संवाद किया और प्रासंगिकता को सामने रखा। संत नामदेव और संत तुकाराम हिन्दी से इसी समय परिचित हुए। हिन्दी काव्यधारा और साहित्य में मराठी संतो का योगदान उल्लेखनीय है। मेरी दृश्टि से सच्चे संत नामदेव, संत ज्ञाने वर, संत तुकाराम, संत बहिनाबाई, संत चोखोबा, संत जनाबाई, संत एकनाथ, संत गाडगेबाबा, संत तुकाराम महाराज हैं। इन संतो ने विकृति के बाजार में संस्कृति का भांखनाद किया हैं। मराठी और हिन्दी संत कवियों ने मानव की एकता एवं मानव मात्र की चिंता को लेकर साहित्य लिखा। इसीलिए यह साहित्य हर युग में प्रासंगिक हैं।हमारे देश की अनेक भाशाओं में संत साहित्य की समृद्ध ाली परंपरा रही हैं। हिन्दी संत साहित्य में रचनात्मक प्रासंगिकता – मध्ययुगीन भारत की संपूर्ण चेतना को मार्मिक काव्य की वाणी में अभिव्यक्ति देने वाली भारतीय संस्कृति के महानायक गोस्वामी तुलसीदास थे। भारत के सबसे बडे लोकनायक कहे जाते हैं। उन्होंने हिन्दी साहित्य में रचनात्मक प्रासंगिकता को सामने रखकर लेखन किया हैं। उनका 'रामचरितमानस' महत्वपूर्ण माना जाता हैं। तुलसीदास कहते है ''कीरति भनिती भूति भलि सोई।

सुरसरि सम सब कहुँ हित होई।।''12

कीर्ति और ऐ वर्य की भाँति कविता भी वहीं अच्छी लगती हैं। जिससे गंगा की भाँति सबकी भलाई हो, जो सबके लिए कल्याणकारी हो। तुलसीदास ने रचनात्मक प्रासंगिकता को ध्यान में रखकर लेखन किया हैं।

मध्ययुगीन हिन्दी संत कवियों में युगजीवन का स्पंदन ध्वनित होता हैं। भक्ति युगीन साहित्य का उदय हिन्दी साहित्य में हुआ। कबीर का समस्त साहित्य ऐसे संदर्भों और प्रसंगों से भरा हुआ हैं। जिनका संबंध हमारे वर्तमान जीवन से हैं।

कबीर ने ऐसे साधु संतों पर व्यंग करते हुए कहा है – बिंदु राखे जो तरी ऐ भाई।

खुसरे किउ न परम गति पाई।''13

आज तो ब्रह्मचर्य के नाम पर व्यभिचार फैला हुआ हैं। ढोंगी वे ा में नित माला फेरने वाले और ध्यान में मग्न रहनेवाले साधू दिखाई देते हैं। इसीलिए कबीर ने कहा है –

''माला फेरत जुग गया गया न मनका फेर ।

करका मनका डारी दे मनका– मनका फेर।।'

अपने युग की सामाजिक बुराईयों तथा विसंगतियों को दूर करना ही कबीर का उद्दे य रहा हैं। इसीलिए कबीर कहते है कि –

''जाति न पूछो साधु की, पूछ लिजिए ग्यान।

मोल करो तलवार का, पडा रहन दो म्यान।।''14

कबीर का विद्रोह,विद्रोह के लिए विद्रोह नही हैं बल्कि कुप्रथाओं और कुरीतियों के प्रति विद्रोह हैं। कबीर ने उस समय समाज में पनप रहे अंधवि वास, बाह्यआडंबर, अज्ञान, जप तप, मूर्तिपूजा, तीर्थाटन, श्राद्ध जैसे क्रियाकलापों की कटु निंदा की हैं जैसे

''पाथर पूजे हरि मिले, तो मैं पुजू पहार।

घर की चकिया कोई न पूजे, जेहि का पिसा खाय।।''

जिसकी सार्थकता आज भी हमें प्रतीत होती हैं। संत कबीर का साहित्य हमे ाा से समाज का पथ प्रद र्क रहा हैं और आगे भी रहेगा। उनके साहित्य की प्रासंगिकता कभी कम नहीं होगी। संत नामदेव के अनुसार ई वर एक है जो सर्वव्यापक और सर्वपूरक हैं। जिधर भी देखो वहीं दिखाई देता हैं। माया के विचित्र चित्रों से संसार मुग्ध हैं, कोई विरला ही उसे जान पाता हैं और जो देख पाता है वह ई वर मय हो जाता हैं। नामदेव कहते हैं –

''अंबरीश को दियो अभय पद,

राज विभीशण अधिक करयो।

ध्रुव जो अटल अजहुँ न टरयो।

भगत हेत मारयो हरिना कुस,

नृसिंह रूप है देह धरयो।

नामा कहे भगति बस केसव,

अजहुँ बि के द्वार खरयो ।''

प्रस्तुत पद संत नामदेव का है। यह पद ऐसे समय में लिखा गया जब हिन्दी साहित्य संसार में न तुलसी का अविर्भाव हुआ था न ही सूर का। संत कवियों का आद र्ा और उनकी रचनाओं का उद्दे य दूसरो की पीडा दूर करना और सभी समाज को सुख और मनः भाांति प्रदान करना था। मानवी मूल्यों की स्थापना करना और अमीर, गरीब के बीच की दूरी दूर करना था। असमानता को दूर करना यह उद्दे य सामने रखकर भारतीय संतों ने कार्य किया हैं लेकिन आज भी ऐसी कई ज्वलंत समस्याएं है जो भारत की बहुसंख्य जनता को सता रही हैं। उसे दूर करने के लिए संतो का संदे ा आज भी प्रासंगिक हैं। मध्यकाल के संत कवियों में संत कबीर , संत गुरूनानक, संत तुलसीदास, संत दादू जैसे संत कवियों ने धर्मिक ऐक्य भाव संबंधी महत्वपूर्ण प्रयास किये हैं।संत कवियों में गुरूनानक एक प्रसि़द्ध संत थे जिन्होंने हिंदु , इस्लाम और सुफी संप्रदाय के सार तत्व को अपनाकर एक नए सिक्ख धर्म की स्थापना की। उनके धर्म में 'सर्वधर्म समभाव' सर्वश्रेश्ठ तत्व माना गया। उन्होंने कहाँ 'स्त्री से ही मनुश्य जन्म लेता है, स्त्री से विवाह होता और परिवार का निर्माण होता है। उसी से सृश्टि का क्रम चलता हैं।''16गुरूनानक की स्त्री संबंधी वाणी अपने सार्वकालिक विचारों से भरे रहने के कारण आधुनिक संदर्भ में महत्वपूर्ण और प्रांसगिक हैं। संत दादू दयाल प ुपक्षियों तथा कीटानुओं तक को समानता की दृश्टि से देखते थे। संत दादू दयाल कहते हैं ''दादू सभि कीर देखिए ,कुजर कीट समान ।''दादू दुबध्या दूर करि , तजि आप अभिमान ''17 संत दादू की काव्य रचनाओं के अवलोकन से यह स्पश्ट होता है कि वे पूर्णता के, धार्मिक एकता के पक्षपाती थे, जो वर्तमान संदर्भ में नि ि चत रूप से प्रासंगिक हैं। सूफी संतों ने भी सामाजिक प्रासंगिकताओं को सामने रखकर सामाजिक समस्याओं का चिंतन किया है। दे ा के सभी धर्म के संत कवियों ने दे ा की जनजातियों में जागरूकता लाने का प्रयास किया हैं। भारतीय संतो ने समाज और धर्म के पाखंडों एवं अन्यायों तथा अंधवि वासों के विरूद्ध आवाज उठाई हैं। और सामाजिक मानवी चेतना निर्माण करने का उत्तरदायित्व

अच्छी तरह से निभाया हैं। कबीर ने इस संदर्भ में कहा है ''पोथी पढ–पढ जग भया, भया न पंडित कोई। ढाई अक्षर प्रेम का पढे सो पंडित होई।।''18 भौतिक सुखों में लिप्त आज का मनुश्य इस अवस्था से संक्रमित हो रहा हैं। आज भारत दे ा के बहुसंख्यांक लोगों को देववाद तथा अज्ञान से मुक्ति दिलाने के लिए कबीर साहित्य की आव यकता हैं। संत रैदास कबीर के समसामयिक संत कवि थे। वे भी धर्मिक एकता के प्रचारक रहे हैं। मध्ययुगीन भारतीय संत, कवियों की रचनाओं ने धर्मिक सहिश्णुता, एकता का आवाहन किया हैं जो आज के आधुनिक युग में भी प्रासंगिक हैं। अहिंसा तत्वों का सार सभी संतों के विचारों में था। जो अत्यंत प्रासंगिक है। इसमे कोई संदेह नही हैं।

निश्कर्श – अंततः कहां जा सकता है कि मराठी और हिन्दी संत कवियों नेअपने साहित्य के माध्यम से यह सींख दी है कि ई वर एक है तथा जन्म के आधार पर कोई भी ऊँचा या नीचा नहीं हैं। आज के आधुनिक युग में एक प्रगत, एकात्मक और सुसंस्कृत समाज निर्माण में भारतीय संत साहित्य महत्वपूर्ण भूमिका निभाता आ रहा हैं। मध्ययुगीन काल में संतों ने जो लेखन किया हैं वह आज के युग की परिस्थितियों पर लागू होता हैं। जहाँ तक हिंदी का प्र न है, संत कबीर और मराठी में तुकाराम द्वारा अभिव्यक्त विचार एवं विशय आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं।भारत आज भी जाति –पाँति के बंधन से मुक्त नहीं हो पाया है। इस अस्थिरता का लाभ राजनैतिक नेता अच्छी तरह उठा रहे हैं। दूसरी और सूरदास की कृश्णलीला, चाहे वह बाललीला हो, कालियामर्दन हो, माखनचोरी हो अथवा श्रृंगार का संयोग व वियोग पक्ष हो हर क्षेत्र में हृदयग्राही बन पडे हैं। साथ ही तुलसी की समन्वय साधना एवं रामराज्य की कल्पना आज भी दिवास्वप्न की तरह भाव के धरातल पर आंनदित तो करते है पर यथार्थ से बिल्कुल परे है। एक और मीरा का 'कृश्ण' विरहानुभूति का मानक बन बैठा है तथा दूसरी और रसखान का 'कृश्ण', रस की खान रहीम को लोकप्रियता उनके दोहों के कारण अधिक हुई है, क्योंकि ये सीधे चोट करते हैं। इनके दोहों में जो चमत्कार है वह पढने और सुननेवालों को बरबस अपनी और खींच लेते हैं।तुकाराम, नामदेव, एकनाथ की विट्ठल भक्ति आदि का सामान्यजन आदर के साथ स्मरण करते हैं। भक्ति की प्रासंगिकता की चमक भक्ति आंदोलन में आज भी दिखाई देती हैं। मराठी और हिन्दी संत कवियों की सामाजिक चेतना की क्रांति की प्रासंगिकता आनेवाले युगों– युगों तक बनी रहेगी। इसमें कोई संदेह नहीं हैं।

संदर्भ सूची –

डॉ मु ब भााह – हिंदी में नवजागरण पृ 25

वहीं – पृ 25

डॉ सुरिंदर कौर संधू – कबीर साहित्य की प्रासंगिकता, राश्ट्रवाणी सितंबर1998, पृ 8

डॉ राजे वर प्रसाद चतुर्वेदी – कबीर ग्रंथावली, साखी भाग 6, पृ 164

श्री विनोबा रखुमाई– श्री क्षेत्र देहू तुकारामाची अभंगगाथा पृ 594

डॉ धीरेंद्र वर्मा – हिन्दी साहित्यकोश भाग–1, पृ 854

डॉ आ• ह• सालूंखें –विद्रोही तुकाराम पृ 34

डॉ भारती गोरे – हिन्दी काव्यधारा को मराठी संतों की देन , राश्ट्रवाणी नवंबर– दिसंबर 2012,पृ16

वहीं– पृ 17

तुकाराम दौड –लोककवि संत तुकाराम का`लोकसंवाद ,चिंतन सृजन अक्तूबर– दिसंबर 2010 पृ 97

वहीं पृ 98

डॉ वीणा मनचंदा– लोकनायक तुलसी, राश्ट्रवाणी , मई–जून 2011,पृ 07

डॉ सुरिंदर कौर संधू – कबीर साहित्य की प्रासंगिकता, राश्ट्रवाणी सितंबर 1998, पृ 09

प्रा योगे ा पाटील – मध्यकालीन हिंदी संत कवियों की प्रासंगिकता, राश्ट्रवाणी जूलाई– अगस्त 2013 पृ

डॉ भारती गोरे – हिन्दी काव्यधारा को मराठी संतों की देन, राश्ट्रवाणी नवंबर– दिसंबर 2012 पृ 17

डॉ गुरूचरण सिंह–युग प्रवर्तक गुरूनानक और उनकी वाणी पृ 170

आचार्य पर ुराम चतुर्वेदी– दादू ग्रंथावली, पृ 274

डॉ रणजित जाधव – 21 वी सदी में हिंदी संत साहित्य की प्रासंगिकता, राश्ट्रवाणी मई–जून 2012 पृ